VII paper

Life and Teaching of Bhagawan Budha.

भगवान बुद्ध के जीवन और उपदेश

महात्मा बुद्ध का सर्वप्रथम जन्म के समय नाम सिद्धार्थ तथा गौतम था। इतिहासकारों के अनुसार इन्होंने लगभग ई० पू० 563 में जन्मग्रहण किया। इनका जन्म कपिलवस्तु के निकट लुम्बनी-वन में हुआ था। यह स्थान आजकल नेपाल के अन्तर्गत भारत की सीमा से 5 मील की दूरी पर है। यहाँ पर अशोक का एक अभिलेखयुक्त स्तम्भ है, जिसमें लिखा है — हिद बुधे जातेति। उनकी माता का नाम मायादेवी तथा पिता का नाम शुद्धोदन था। उनदिनों कपिलवस्तु शाक्यवंशी क्षत्रियों का गणराज्य था और शुद्धोदन उसके राजा थे। महात्मा बुद्ध ने शाक्यवंशी क्षत्रिय कुल में जन्मग्रहण किया था अतः उन्हें शाक्यमुनि भी कहते हैं जन्म के समय ही उनकी माता का देहान्त हो गया और उनकी मातृष्वसा (मौसी) महाप्रजापति गौतमी उनका पालन-पोषण किया। 16 वर्ष की अवस्था तक राजकुमार सिद्धार्थ ने क्षत्रियोचित शिक्षा ग्रहण की। 16वें वर्ष में शस्त्र और शास्त्र में निपुणता की परीक्षा देकर यशोधरा नामक पत्नी का स्वयंवर में वरण किया। तीन वर्षों तक राज-पाट के विपुल वैभव का आनन्द लेते रहें। राहुल नामक पुत्र-रत्न भी प्राप्त किया। परन्तु जन्म से ही गौतम बड़े शान्त प्रकृति के पुरुष थे, तथा चिंतन भाव से रहा करते थे। एकान्तवास में अधिक अभिरुचि रखते थे। अतः राजकीय भोग उन्हें रोग के समान प्रतीत होता था। संसार उन्हें असार प्रतीत होता था। उनके पिता ने सांसारिक भोग की सभी सामग्रियों को इकट्ठा कर उन्हें कुशल राजकुमार बनाना चाहते थे। शीत, ताप और वर्षा काल के लिए अलग-अलग भवनों का निर्माण किया गया तथा इन भवनों को सांसारिक भोग से पूर्ण किया गया। परन्तु परमार्थ में आनन्द लेनेवाले गौतम को संसार का आकर्षण स्पर्श न कर सका। वे सर्वदा उदासीन रहते थे। उनका उदासीन रहना पिता के लिए चिन्ता का विषय बन गया। एक दिन मन बहलाव के लिए उन्हें स्वर्ण सुसज्जित रथ पर नगर में घुमाया गया। घूमते हुए अचानक उनकी दृष्टि एक वृद्ध, एक

Scanned with CamScanner

रोगी और मृतक शव पर पड़ी। उन्हें देखकर राजकुमार का हृदय द्रवीभूत हो गया। वृद्ध रोगी और शव के रूप में उन्होंने संसार का सच्चा स्वरूप देखा और विचार करने लगे – हम जीते हैं मरने के लिए, जवान हैं वृद्ध होने के लिए, स्वस्थ हैं रोगी होने के लिए। इस जीवन स्वास्थ्य और यौवन का अन्त केवल मृत्यु, रोग और वार्धक्य है। कृत्रिम संसार का वास्तविक रूप यही है। दिखावटी संसार का नग्न रूप नहीं है, क्षणिक सुख में उछलता हुआ मानव वस्तुतः भीतर से रोता है। संसार का बाह्य क्षणिक सुख तो चिरन्तन दुःख की नींव पर टिका है। जीवन और यौवन की स्मृति रेखा के नीचे मृत्यु और बुढ़ापा का भीषण उपहास है शव के सत्य पर जीवन का मिथ्या नर्तन हो रहा है। इस प्रकार बाह्य दृष्टि से फले-फूले संसार को आन्तरिक दृष्टि से रिक्त या खोखला समझकर, ऊपरी स्तर पर सुखी संसार को निचली स्तर पर दुःखी और असार मानकर इस त्याग करने का निश्चय किया।

महा – अभिनिष्क्रमण :→

उन्तीस वर्ष की अवस्था में सिद्धार्थ ने गृह-त्याग किया, क्षणिक संसार से विदा लेकर चिरन्तन सत्य की खोज में, जरा-मरण का निवारक सिद्धान्त ढूँढने के लिए निकल पड़े। इस गृह-त्याग का नाम ही अभिनिष्क्रमण या महायात्रा है। यात्रा या अभिनिष्क्रमण तो बराबर हुआ करता है परन्तु जिस यात्रा के बाद मनुष्य लौटता नहीं वह महायात्रा कहलाती है। सिद्धार्थ को सत्य की खोज किए बिना पुनः घर नहीं आना था, अतः उनकी यात्रा महायात्रा या महाअभिनिष्क्रमण कहलाती है। सुन्दर पत्नी यशोधरा का प्रेम, नवजात पुत्ररत्न राहुल का वात्सल्य और राजकीय विलास उनके साधनामार्ग में बाधक थे। अतः कामिनी कनक और कीर्ति की कामनाओं का सर्वथा परित्याग कर वे पूर्णतः विरक्त, सभी सांसारिक शृंखलाओं को तोड़कर संन्यासी हो गए। सिद्धार्थ सत्य की साधना में संलग्न हो गए। सत्य और शान्ति की खोज में छः वर्षों

तक भटकते रहे। आलार कलाम और उद्दक रामपुत्र आदि प्रसिद्ध गुरुओं से ध्यान-योग की शिक्षा ली परन्तु इससे वे सन्तुष्ट न हुए। बुद्ध चरित में कहा गया है कि 'आकिञ्चन्यायतन नामक सर्वश्रेष्ठ ध्यान योग की शिक्षा तथागत के यहाँ ग्रहण की। फिर भी इन्हें शान्ति नहीं मिली। अन्त में वे गया के समीप उरुवेला में निरंजना नदी के तट पर एक पीपल वृक्ष के नीचे स्थिर आसन से ध्यान में लग गए। यह भगवान बुद्ध का 'समाधि' काल कहलाता है। इस अवस्था में भगवान छः वर्षों तक समाधिस्थ रहे। अंत में उनकी आँखें खुलीं, ज्ञान मिला एवं बोधिज्ञान हुआ। संस्कार रहित चित्त में तृष्णा का क्षय हो गया। यह घटना वैशाख की पूर्णिमा के दिन घटी। अब गौतम-बुद्ध हो गये। ज्ञान बोध हो गया और पीपल का वृक्ष बोधि-वृक्ष कहलाने लगा।

उपदेश:→ महात्मा बुद्ध ने 45 वर्षों तक बातचीत भाषण और दृष्टान्तों द्वारा लोगों तक अपना सन्देश पहुँचाया। उसने लोगों तक अपने सन्देश को पहुँचाने का अनोखा मार्ग अपनाया। उसने लोगों को मार्ग दिखाने के लिए देश-भर की पद-यात्रा की। इस प्रकार ग्राम-ग्राम और नगर-नगर तक उसका सन्देश पहुँचाया। उसके 1200 भक्तों तथा प्रिय शिष्यों ने इस लम्बी यात्रा में बराबर उसका साथ दिया। उसने कभी भविष्य की चिन्ता नहीं की। उसका समय मनन चिन्तन और विवेचन में व्यतीत होता था।

'चार आर्य सत्य" उसे अत्यन्त प्रिय थे। उसमें इस बात पर बल दिया गया था कि जीवन दुःखों का घर है और ये दुःख केवल तभी दूर हो सकते हैं जब इच्छाओं को अपने जीवन से निकाल दिया जाए।

1 प्रथम सत्य है शोक की विद्यमानता। "संसार में सभी कुछ शोकपूर्ण, नश्वर और पीड़ा से भरा हुआ है।"

2. द्वितीय सत्य है, इस शोक का कारण। "इच्छा ही इन सबका कारण है। अतः इस इच्छा को दूर करना चाहिए।"

Scanned with CamScanner

3. तृतीय सत्य है — "दुःख शोक की समाप्ति"। इच्छा के त्याग से ही मनुष्य दुःखों से छुटकारा पा सकता है।

4. चौथा सत्य है कि - परमानन्द की प्राप्ति और इच्छाओं की समाप्ति का कोई मार्ग अवश्य होना चाहिए और ऐसा अष्ट-मार्ग को धारणा करने से ही हो सकता है।

इन्हीं चार सत्यों का बुद्ध ने इस प्रकार वर्णन किया है :—

1. हे भिक्षुओं! दुःखों का वास्तविक कारण जन्म है। रोग और वृद्धावस्था दुःखों का घर है। शोक, पश्चाताप, नैराश्य और लालसा इत्यादि दुःख का कारण है।
2. 'हे भिक्षुओं! दुःखों का कारण अवश्य होता है। केवल इच्छा लालसा के जाल मिलकर मनुष्य को पुर्नजन्म के चक्र में फेंक देती है और मनुष्य वासना तथा अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए षड्यन्त्र लगाता है। बस, यही दुःखों का कारण है।
3. हे भिक्षुओं! यह सत्य है कि दुःख और पीड़ा से निवृत्ति प्राप्त की जा सकती है। यह निवृत्ति पूर्ण तरह से इच्छाओं को कुचलकर, त्यागकर, और उससे सम्बन्ध तोड़कर मिल सकती है।"
4. हे भिक्षुओं! यह सत्य है कि इस समस्या का समाधान केवल 'अष्टांग मार्ग' के पालन करने से ही निहित है। अष्टांग मार्ग है - सम्यक विचार, सम्यक संकल्प, सम्यक वाणी, सम्यक व्यवहार, सम्यक जीवन, सम्यक उपाय, सम्यक ध्यान, सम्यक समाधि।

बुद्ध ने बताया कि - दुःखों का कारण चार महासागरों के जल से भी ज्यादा कहीं अधिक मात्रा में आँसू बह चुके हैं। नश्वरता ने मानव के सुख को कम कर दिया है। इच्छा बुरी नहीं बल्कि स्वार्थमय इच्छा बुरी है। सबसे बढ़कर कामेच्छा ही मनुष्य को पुनर्जन्म के सागर में धकेल रही है। मानव निरुद्देश्य होकर जन्म-जन्मान्तरों में भटक रहा है। बुद्ध के शिष्यों में से एक ने सोचा कि आत्म-हत्या द्वारा दुःखों का अन्त किया जा सकता है। किन्तु बुद्ध ने उसे समझाया कि ऐसा करने से -

Scanned with CamScanner

तो आत्मा अपवित्र हो जाएगी और फिर से जन्म लेगी। जन्म-मरण के चक्र को इस तरह नहीं रोका जा सकता। जब बुद्ध के शिष्यों ने उनके इस भाव को अधिक स्पष्ट रूप से जानना चाहा तो बुद्ध ने निम्न पाँच नैतिक नियमों की स्थापना की।

1. किसी प्राणी की हत्या नहीं करनी चाहिए।
2. उस वस्तु को नहीं लेना चाहिए, जो उसे नहीं दी गई।
3. झूठ नहीं बोलना चाहिए।
4. मादक द्रव्यों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
5. व्यभिचार में सदा बचना चाहिए।

बुद्ध का कथन है कि-"क्रोध पर दया से और बुराई पर अच्छाई से विजय प्राप्त करनी चाहिए। विजय घृणा को जन्म देती है क्योंकि विजित व्यक्ति अप्रसन्न होता है। इस विश्व में घृणा के द्वारा घृणा को दूर नहीं किया जा सकता। घृणा तो केवल प्रेम से ही पराजित हो सकती है।"

बुद्ध की शिक्षाओं का आधार कर्म है। यह कर्म का सिद्धान्त इतना कठोर है कि न तो कोई इसे मानने से इनकार कर सकता है और न ही इसके चक्र को कोई मानव का पतन कर सकता है।